



FuturePointIndia.com
(फ्यूचर पॉइंट द्वारा रचित)

Leo Palm

संस्करण: अंग्रेजी | हिन्दी

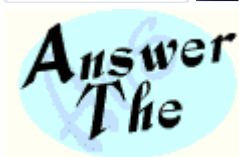
मंगलवार, अगस्त 21, 2012

मुखपृष्ठ | आपके विचार | हमसे मिलिए

चैनल

- राशिफल
- ? ज्योतिष संस्था *नया*
- ? ज्योतिष सामग्री *नया*
- परामर्श
- पंचांग
- बायोरेडमिक चार्ट
- व्यापारिक भविष्यवाणी
- पर्व एवं त्योहार
- फ्री डाउनलोड
- मंत्र
- चिकित्सा व ज्योतिष
- फ्यूचर समाचार
- पुस्तकें
- सेवाएं
- ज्योतिष डायरेक्ट्री
- ज्योतिष शिक्षा
- ऑन लाइन प्रश्न
- अध्यात्म
- सेमिनार
- इंफंडित नैटवर्क
- तीर्थयात्रा
- शोध लेख

साइट ढूँढिए



आपका फैसला

क्या मंगल दोष वैवाहिक जीवन को प्रभावित करता है?

- ☐ हाँ
- ☐ नहीं
- ☐ पता नहीं

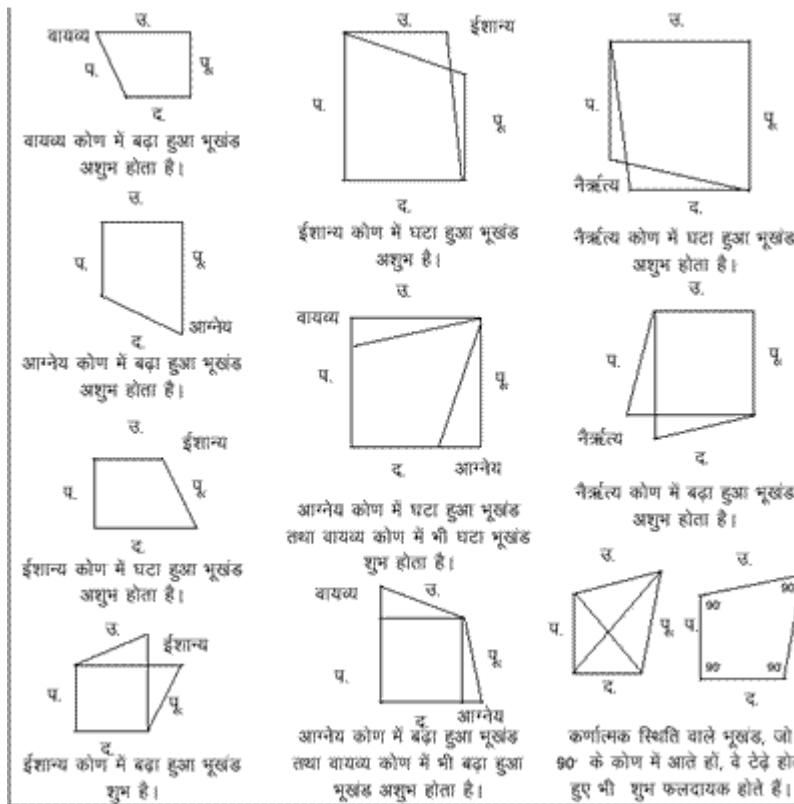
वोट

[पिछले माह के परिणाम](#)

भूखंड का आकृतिमूलक वर्गीकरण

डॉ. भोजराज द्विवेदी

भूखंड के न्यूनाधिक चतुष्कोणों का फल



भूखंड का ढलान से वर्गीकरण

वर्णानुसार भूमि परीक्षा

वर्ण : श्वेत मृत्तिका (मिट्टी) की भूमि ब्राह्मणी, रक्त वर्ण की क्षत्रिया, हरित वर्ण पीली वैश्या और कृष्ण वर्ण की भूमि शूद्रा कही जाती है।

गंध : धी के समान सुगंधा भूमि ब्राह्मण, रक्त गंधा क्षत्रिया, मधु (अन्न) गंधा वैश्या और मद्यगंधा या विष्टा जैसी गंध वाली भूमि को शूद्रा कहते हैं।

स्वाद : इष्ट भूमि की धूल को जिह्वा पर रखें। मधु रस युक्त ब्राह्मणी,

If you are not able to view the page properly then [Download Hindi Font.](#)

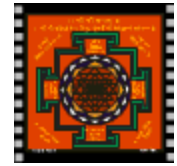
पंजीकृत सदस्य

यूजर आईडी

.पासवर्ड

[पंजीकरण](#) | [संशोधन](#)
[पासवर्ड भूल गये हैं?](#)

ज्योतिष सामग्री



• [जोड़िए](#) हमारी साइट को अपने Favorites में

आज ही खरीदिए

लियो गोल्ड

डेमो कॉपी 250/-



फ्यूचर पॉइंट द्वारा निर्मित लियो गोल्ड, विंडो पर आधारित जन सामान्य के प्रयोग हेतु सुविधापूर्ण ज्योतिषीय सॉफ्टवेयर है।

और

कषाय रस युक्त भूमि क्षत्रिया, आम्ल रस युक्त वैश्या और कषाय रस युक्त भूमि शूद्रा भी कहलाती है।

तृण परीक्षा : जिस भूमि पर कुश दर्भ एवं हवनीय वृक्ष हों, वह ब्राह्मणी, शर (मुज), रक्तवर्णीय पुष्प और वृक्षों वाली, सर्प से युक्त भूमि क्षत्रिया, कुशकाश, धन-धान्य और फल युक्त वृक्षों वाली भूमि वैश्या तथा सर्वतृण युक्त निम्न कोटि के राक्षस वृक्षों वाली भूमि शूद्रा कहलाती है।

भूमि का प्रभाव: ब्राह्मणी भूमि सर्वप्रकार के आध्यात्मिक सुख देती है। क्षत्रिया राज्य देती है; वर्चस्व और पराक्रम बढ़ाती है। वैश्या धन-धान्य से युक्त करती है, ऐश्वर्य बढ़ाती है और शूद्रा निंदित है, क्योंकि यह भूस्वामी को कलह-झंझट और झगड़ों में उलझाती है। यह भी शास्त्र का वचन है कि ब्राह्मणादि चारों वर्णों के लिए, क्रम से, धृतगंधा, रक्तगंधा, अन्नगंधा और मद्यगंधा भूमि शुभ होती हैं। भूमि कोई भी रंग की हो, परंतु कुछ कठोर और स्निग्ध (चिकनी) हो, तो उत्तम होती है।

भूमि परीक्षा की दूसरी विधि:

पूर्व कथित प्रकार से गड्ढे को खोदें। बाद में उसमें जल भर कर, वहां से सौ पद तक जा कर वापस लौट आएं। इतने समय में गड्ढे का जल ज्यों का त्यों बना रहे, तो शुभ होता है।

ढलान के अनुसार भूमि की परीक्षा: उत्तरी तरफ ढाल वाली भूमि ब्राह्मणों को, पूर्व की ओर ढाल वाली भूमि क्षत्रियों को, दक्षिण की ओर ढाल वाली भूमि वैश्यों को और पश्चिम की ओर ढाल वाली भूमि शूद्रों के लिए शुभ होती है। ब्राह्मण चारों ओर की ढालू भूमि में घर बना सकता है। शेष वर्णों के लिए अपनी-अपनी दिशा की ढालू वाली भूमि पर ही घर बनाना उत्तम रहता है।



जल से भरा गड्ढा

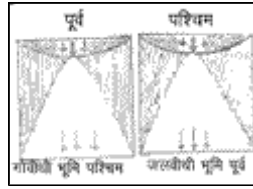
वराहमिहिर का वास्तु ज्ञान:

वराह मिहिर ने चार दिशाओं के अनुसार चतुर्दिशा भूमि पर चारों वर्णों के संदर्भ में विचार किया। परंतु वास्तु शास्त्र में इस वर्गीकरण को, अत्यंत विस्तृत आकार दे कर, 26 प्रकार की भूमियों का नामोल्लेख किया गया है, जिनके नाम और प्रभाव इस प्रकार से हैं :

गोवीथी : जो भूमि पश्चिम में ऊंची और पूर्व में नीची हो, उसे गोवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि पुत्र संतान की वृद्धि करती है।

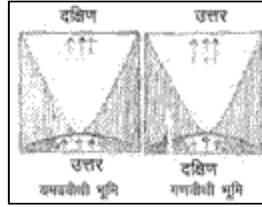


लियो-पाम की मेमोरी में ज्योतिषीय प्रोग्राम है, जिससे विभिन्न ज्योतिषीय कार्य किये जा सकते हैं [और](#)



जलवीथी : जो भूमि पूर्व में ऊंची और पश्चिम में नीची हो, ये उसे जलवीथी कहते हैं। यह भूमि संतान का नाश करती है।

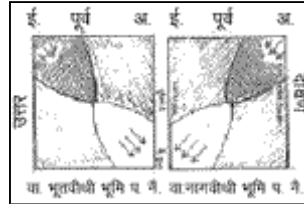
यमवीथी : जो भूमि उत्तर में ऊंची और दक्षिण में नीची हो, उसे यमवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि आरोग्य नाश करती है।



गणवीथी : जो भूमि दक्षिण में ऊंची और उत्तर में नीची हो, उसे गणवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि आरोग्य लाभ देती है।

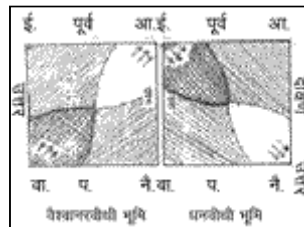
भूतवीथी : जो भूमि ईशान कोण में ऊंची और नैऋत्य में नीची हो, उसे भूतवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि महान कष्टदायक होती है।

नागवीथी : जो भूमि अग्नि कोण में ऊंची और वायु कोण में नीची हो, उसे नागवीथी कहते हैं। यह भूमि धन देती है।



वैश्वानरवीथी : जो भूमि वायु कोण में ऊंची और अग्नि कोण में नीची हो, उसे वैश्वानरवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि धन नाश करती है।

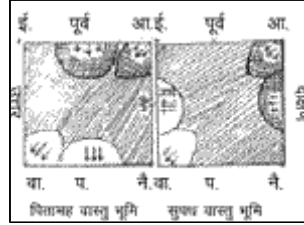
धनवीथी : जो भूमि नैऋत्य कोण में नीची और ईशान में ऊंची हो, उसे धनवीथी कहते हैं। ऐसी भूमि खूब लक्ष्मी देती है।



पितामह वास्तु: जो भूमि पूर्व और अग्नि कोण के मध्य में ऊंची हो कर

पश्चिम और वायु कोण के मध्य में नीची हो, उसे पितामह वास्तु (भूमि) कहते हैं। यह भूमि मनुष्यों को सुख देने वाली कही गयी है।

सुपथ वास्तु : जो भूमि अग्नि कोण और दक्षिण के मध्य ऊंची हो कर, वायु कोण और उत्तर के मध्य नीची हो, उसे सुपथ वास्तु (भूमि) कहते हैं। यह भूमि सर्व कर्म योग्य होती है।



दीर्घायु वास्तु : जो भूमि उत्तर और ईशान कोण के मध्य नीची हो कर, नैऋत्य कोण और दक्षिण के मध्य ऊंची हो, उसे दीर्घायु नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। यह भूमि बहुत उत्तम होती है एवं वंशवृद्धि में सहायक होती है।

पुण्यक वास्तु : जो भूमि ईशान कोण और पूर्व के मध्य में नीची हो तथा नैऋत्य और पश्चिम के मध्य ऊंची हो, उसे पुण्यक नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। यह भूमि द्विजा मात्र (ब्राह्मण, क्षत्रीय, वैश्य) के लिए शुभ फलदायी होती है।



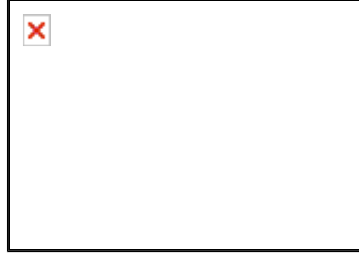
अपथ वास्तु : जो भूमि पूर्व दिशा और अग्नि कोण के मध्य में नीची हो कर वायु कोण और उत्तर के मध्य ऊंची हो, उसे अपथ नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। इसमें रहने से मनुष्य को रोग होता है।

रोगकर वास्तु : जो भूमि अग्नि कोण और दक्षिण के मध्य में नीची हो कर वायु कोण और उत्तर के मध्य ऊंची हो, उसे रोगकर नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। इसमें रहने से मनुष्य को रोग होता है।



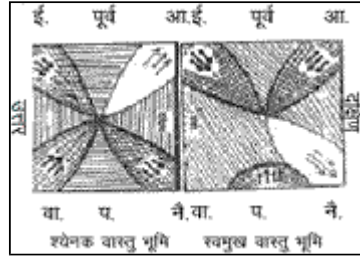
अर्गल वास्तु : जो भूमि नैऋत्य कोण तथा दक्षिण के मध्य नीची हो कर, ईशान कोण और उत्तर के मध्य में ऊंची हो, उसे अर्गल वास्तु भूमि कहते हैं। ऐसी भूमि ब्रह्म महापापों को दूर करती है।

श्मशान वास्तु : जो भूमि ईशान कोण और पूर्व के मध्य में ऊंची हो कर, पश्चिम और नैऋत्य कोण में नीची हो, उसका नाम श्मशान वास्तु (भूमि) है। यह भूस्वामी के कुल का नाश करती है।



श्येनक वास्तु : जो भूमि अग्नि कोण में नीची हो कर नैऋत्य, ईशान और वायव्य कोण में ऊंची हो, उसे श्येनक नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। ऐसी भूमि भूस्वामी के नाश एवं मृत्यु का कारण होती है।

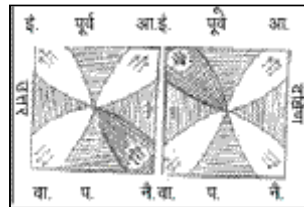
स्वमुख वास्तु : जो भूमि ईशान कोण, अग्नि कोण और पश्चिम में ऊंची हो कर नैऋत्य कोण में नीची हो, उसे स्वमुख नामक वास्तु (भूमि) कहते हैं। ऐसी भूमि में रहने वाला प्राणी दरिद्रता प्राप्त करता है।



ब्रह्म वास्तु : जो भूमि नैऋत्य कोण, अग्नि कोण और ईशान कोने में ऊंची हो कर पूर्व तथा वायव्य कोण में नीची हो, उसे ब्रह्म वास्तु कहते हैं। ऐसी भूमि मनुष्यों के लिए सदा बुरी है।

स्थावर वास्तु : जो भूमि अग्नि कोण में ऊंची हो तथा नैऋत्य कोण, ईशान कोण और वायु कोण में नीची, उसे स्थावर वास्तु (भूमि) कहते हैं। ऐसी भूमि मनुष्यों के लिए सदा शुभ रहती है।

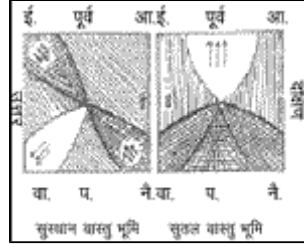
स्थण्डिल वास्तु : जो भूमि नैऋत्य कोण में ऊंची हो तथा अग्नि कोण, वायु कोण और ईशान कोण में नीची हो, उसे स्थण्डिल वास्तु कहते हैं। यह सभी प्राणियों के लिए शुभ है।



शाण्डुल वास्तु : जो भूमि ईशान कोण में ऊंची हो कर, अग्नि कोण, नैऋत्य कोण और वायु कोण में नीची हो, उसे शाण्डुल वास्तु (भूमि)

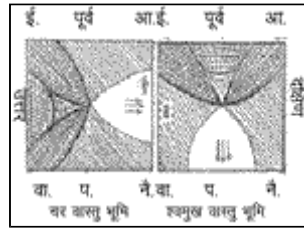
कहते हैं। यह सभी प्राणियों के लिए अशुभ है।

सुस्थान वास्तु : जो भूमि नैऋत्य कोण और ईशान कोण में ऊंची हो कर वायव्य कोण में नीची हो, उसे सुस्थान वास्तु कहते हैं। ऐसी भूमि ब्राह्मणों के लिए अति उत्तम होती है।



सुतल वास्तु : जो भूमि पूर्व दिशा में नीची हो कर, नैऋत्य कोण, वायु कोण और पश्चिम में ऊंची हो, उसे सुतल वास्तु कहते हैं। ऐसी भूमि क्षत्रियों के लिए अति उत्तम होती है।

चर वास्तु : जो भूमि उत्तर दिशा, ईशान कोण और वायु कोण में ऊंची हो कर दक्षिण में नीची हो, उसे चर वास्तु कहते हैं। ऐसी भूमि वैश्यों के लिए अति उत्तम होती है।



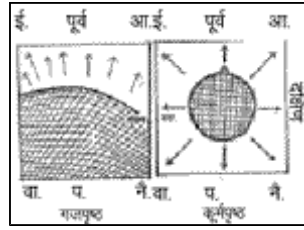
श्वमुख वास्तु: जो भूमि पश्चिम दिशा में नीची हो कर ईशान कोण, पूर्व दिशा और अग्नि कोण में क्रम से ऊंची हो, उसे श्वमुख वास्तु (भूमि) कहते हैं। ऐसी भूमि शूद्रों के लिए अति उत्तम होती है।

पानी के बहाव से भूमि की परीक्षा:

परीक्षा योग्य भूमि पर खूब जल गिराएं। यदि पानी उत्तराभिमुख बहे, तो वह भूमि ब्राह्मणों के लिए उत्तम होती है। पूर्वाभिमुख जल के बहाव वाली भूमि क्षत्रियों के लिए उत्तम, दक्षिण मुख जल बहे, तो वह भूमि वैश्यों के लिए श्रेष्ठ तथा पश्चिम मुख पानी के बहाव वाली भूमि शूद्रों के लिए श्रेष्ठ होती है।

भूपृष्ठ से भूमि की परीक्षा: भूमि के मध्य वाले पठारी (कठोर) भाग को पृष्ठ कहते हैं। इस भेद से चार प्रकार की भूमि कही गयी है :

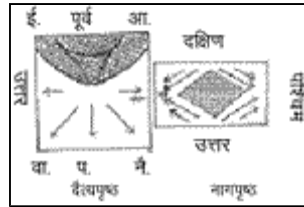
गजपृष्ठ: जो भूमि दक्षिण, नैऋत्य, पश्चिम और वायु कोण में ऊंची हो, उसे गजपृष्ठ कहते हैं। गजपृष्ठ भूमि में वास करने से लक्ष्मी का निवास, धन की विशेषता और आयु की निरंतर वृद्धि होती है।



कर्मपृष्ठ: जो भूमि मध्य भाग में विशेष ऊंची हो और चारों दिशाओं में नीची हो, उसको कर्मपृष्ठ कहते हैं। ऐसी भूमि निवासयोग्य होती है, जिस पर निवास करने से नित्य उत्साह की वृद्धि होती है। सुख और धन-धान्य का लाभ होता है।

दैत्यपृष्ठ: जो भूमि ईशान, पूर्व और अग्नि कोण में ऊंची हो और पश्चिम में नीची हो, उसे दैत्यपृष्ठ कहते हैं। दैत्यपृष्ठ पर निवास करने से लक्ष्मी नहीं आती तथा धन और पुत्र की निरंतर हानि होती है।

नागपृष्ठ: जो भूमि पूर्व-पश्चिम दिशा में लंबी हो तथा दक्षिण और उत्तर दिशा में ऊंची हो, उसका नाम नागपृष्ठ है। नागपृष्ठ भूमि पर वास करने से अवश्य ही मृत्यु होती है तथा स्त्री हानि, पुत्र हानि और पद-पद में शत्रु वृद्धि होती है।



चित्रों की समझ के लिए :

1. काले और छोटे तीर ऊंची भूमि को बताते हैं।
2. लंबे और पतले तीर ढलान को बताते हैं।
3. ऊंचाई वाली जमीन चौकड़ी युक्त है।
4. नीची जमीन खाली (सफेद) है।

FuturePointIndia.com के बारे में | [हमको विज्ञापन दें](#) | [आपके विचार](#) | [हमसे मिलिए](#) | [मुखपृष्ठ](#)

© 1998-2002 FuturePointIndia.com (P) Ltd. - All rights reserved - [Disclaimer](#) - [Privacy Policy](#)

[ऊपर](#)

[पयचर पॉइंट द्वारा प्राधिकृत साइट](#)